अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

I प्रथम अध्याय : सूर्यबाला:व्यक्तित्व एवं कृतित्व। 1-13

1:1 व्यक्तित्व।

1:1:1 जन्म तथा बचपन।

1:1:2 माता-पिता।

1:1:3 शिक्षा-दीक्षा।

1:1:4 परिवार।

1:1:5 अर्थोपार्जन।

1:1:6 बाह्य व्यक्तित्व।

1:1:7 आंतरिक व्यक्तित्व।

1:1:7:1 मिलनसार।

1:1:7:2 आतिथ्यशील।

1:1:7:3 संवेदनशील।

1:1:7:4 भावुक।

1:1:7:5 हँसमुख।

1:1:7:6 रूचियाँ।

1:1:8 साहित्यिक प्रेरणा।

1:1:9 पुरस्कार।

1:1:10 यात्राएँ।

1:2 कृतित्व।

1:2:1 उपन्यास।

1:2:1:1 मेरे संधिपत्र।

1:2:1:2 सुबह के इंतजार तक।

1:2:1:3 अग्निपंखी।

1:2:1:4 दीक्षांत।

1:2:2 कहानी संग्रह।

1:2:2:1 थाली भर चाँद।

1:2:2:2 मुंडेर पर।

1:2:2:3 यामिनी कथा।

1:2:2:4 गृह प्रवेश।

1:2:2:5 साँझवाती।

1:2:3 व्यंग्य संग्रह।

1:2:3:1 अजगर करे न चाकरी।

1:2:3:2 अगदी सदी का शोधपत्र।

1:2:4 अन्य साहित्य।

निष्कर्ष।

2 द्वितीय अध्याय : सूर्यबाला की कहानियों का वस्तुगत अध्ययन। 14-43

2:1 कहानियों में वस्तु तत्त्व का महत्व।

2:2 सूर्यबाला की कहानियों में वस्तु तत्त्व।

2:2:1 एक इंद्रधनुष्य जुबेदा के नाम।

2:2:2 दिशाहीन मैं।

2:2:3 थाली भर चाँद।

2:2:4 मुंडेर पर।

2:2:5 यामिनी कथा।

2:2:6 गृह प्रवेश।

2:2:7 साँझवाती।

निष्कर्ष।

3 तृतीय अध्याय : सूर्यबाला के कहानियों का चरित्रगत-अध्ययन। 44-74

3:1 चरित्र-चित्रण का स्वरूप।

3:2 कहानी की पात्रयोजना।

3:3 कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्व।

3:3:1 स्वार्थ।

3:3:2 अकेलापन।

3:3:3 उपेक्षा।

3:3:4 हँसमुख / खिलाड़ू वृत्ति।

3:3:5 भयग्रस्त / आतंकित।

3:3:6 नीडर / साहसी।

3:3:7 स्वाभिमान।

3:3:8 दृढ़ या निग्रही।

3:3:9 विवशता।

3:3:10 हीनताबोध।

3:3:11 बेफिक्रीर वृत्ति।

निष्कर्ष।

4 चतुर्थ अध्याय : सूर्यबाला की कहानियों का परिवेशगत अध्ययन। 75-81

4:1 सूर्यबाला की कहानियों में परिवेश।

5 पंचम अध्याय : सूर्यबाला की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन। 82-107

5:1 शिल्प : स्वरूप।

5:2 शिल्प संबंधी कुछ विद्वानों के विचार।

5:3 शिल्प की अनिवार्यता।

5:4 सूर्यबाला जी की कहानियों की शिल्प विधि।

5:4:1 कथावस्तु।

5:4:1:1 प्रस्तावना।

5:4:1:2 मुख्यांश।

5:4:1:3 चरमसिमा।

5:4:1:4 पृष्ठभाग या परिणाम।

5:4:2 कथानक के गुण।

5:4:3 पात्र-चरित्र चित्रण।

5:4:3:1 चरित्रांकन के लिए आवश्यक गुण।

5:4:4 कथोपकथन संवाद।

5:4:4:1 कथोपकथन या संवाद के उद्देश्य।

5:4:4:2 कथोपकथन / संवाद के गुण।

5:4:4:3 कथोपकथन का महत्व।

5:4:5 देश-काल तथा वातावरण।

5:4:5:1 देश-काल के गुण।

5:4:5:2 देश-काल का महत्व।

5:4:6 भाषा शैली।

5:4:6:1 भाषा।

5:4:6:2 शैली।

5:4:6:3 शैली के गुण।

5:4:6:4 कहानी की प्रमुख शैलियाँ।

5:4:6:5 शैली का महत्व।

5:5 सूर्यबाला की कहानियों की भाषा।

5:5:1 शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप।

5:5:1:1 तत्सम शब्द।

5:5:1:2 संस्कृत वाक्य।

5:5:1:3 अरबी, फारसी, उर्दू शब्द।

5:5:1:4 अंग्रेजी शब्द।

5:5:1:5 अंग्रेजी वाक्य।

5:5:1:6 द्विरूक्त शब्द।

5:5:1:7 सार्थक-निरर्थक शब्द।

5:5:1:8 अपशब्द।

5:5:1:9 मुहावरें।

5:5:1:10 कहावतें।

5:5:1:11 बंगाली वाक्य।

5:5:1:12 वर्णनात्मक।

5:5:1:13 आत्मकथात्मक।

5:5:1:14 संवादात्मक।

5:5:1:15 काव्यात्मक।

5:5:1:16 स्मृतिपरक।

5:6 उद्देश्य।

निष्कर्ष।

उपसंहार। 108 - 114

परिशिष्ट। 115 - 118

संदर्भ ग्रंथ-सूची। 119 - 120